संपादकीय

एक बार फिर नववर्ष का का नूतन अंक, नववर्ष की हार्दिक बधाइयों के साथ आपके हाथों में है। एक और साल बीत गया और एक नए साल में प्रवेश कर गए हम। पर क्या सचमुच यह काल-परिवर्तन है,अथवा यह मात्र कैलेंडर परिवर्तन है? दरअसल मनुष्य ने सूर्य, चंद्र की गति के साथ दिन और रात के चक्र आकालांतर में हम अपनी ही बनाई इन समय सारणियों में जकड़ते और कैद होते चले गए। समय को सर्वाधिक मूल्यवान मानते हुए, विभिन्न प्रकार की समय सारणियों को मनुष्य जीवन में

जनजातीय गोंड कला से भारत का हर बच्चा परिचित हो

(जानी-मानी गोंड कलाकार **दुर्गा बाई व्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

दुर्गा बाई व्याम गोंड चित्रकला की सबसे युवा और प्रतिभाशाली चित्रकार हैं। इनका जन्म डिंडौरी (म.प्र.) में गोंड जनजाति की उपशाखा परधान परिवार में हुआ। दुर्गा ने अपने घर में परंपरागत ढंग से गोंड चित्रकला सीखी। मिथकीय चित्रों में इनका मन सबसे अधिक लगता है और इनके सारे चित्र किसी न किसी गोंड मिथक अथवा मिथकथाओं से रूपायित होते हैं। दुर्गा को नारंगी, पीला, सुनहरा और उजला हरा रंग सबसे अधिक भाते हैं। रंग और रेखाओं का संतुलन इनकी चित्रकला की विशेषता है। इनकी सृजन यात्रा सामूहिक कैंप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल से 1996 में शुरू हुई और अभी तक चल रही है। इन्हें अब तक राज्य स्तरीय पुरस्कार 2002, रानी दुर्गावती राष्ट्रीय पुरस्कार 2009, दिल्ली कथा चित्रकला 2009, राष्ट्रीय पुरस्कार 2011, आदित्य विक्रम बिरला कलाकिरण पुरस्कार 2013, संगीत कला केंद्र मुबई से पुरस्कृत किया गया है।

दुर्गा बाई व्याम
ई डब्ल्यू एस 846, कोटरा सुल्तानाबाद,
भोपाल, म.प्र. 462003